www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री तीर्थ

प्रज्ञा परिजनों का प्रेरणा स्त्रोत

—ब्रह्मवर्चस्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

परम प्रेरक—गायत्री तीर्थ

—)●(—

जनरेटर एक जगह चलते हैं, उनकी उत्पन्न की हुई बिजली दूर-दूर तक के क्षेत्र में ऊर्जा की पूर्ति करती है। ट्यूबवेल एक जगह चलते हैं उनसे सिंचाई दूर-दूर तक होती है। नर्सरी एक जगह उगती है, उसकी पौध दूरवर्ती उद्यानों में जाकर लगती है। अनाज खेत में उगता पेट-अनेकों का भरता है। इसी प्रकार धर्म केन्द्र एक क्षेत्र में विनिर्मित होते और उनके द्वारा धर्म धारणा को जीवन्त रखने का उत्तरदायित्व दूर-दूर के क्षेत्र में सधता है। जिलाधीश पूरे जिले को संभालता है और तहसीलदार अपनी तहसील को। इसी प्रकार धर्म क्षेत्र की सुव्यवस्था, उपयोगिता एवं सर्वतोमुखी प्रगति साधना में छोटे-बड़े धर्म केन्द्रों को निरत रहना पड़ता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए तत्वदर्शियों ने उनकी स्थापना की थी।

धर्म संस्थानों के दो रूप है एक स्थानीय-क्षेत्रीय-सीमित। दूसरे व्यापक, समर्थ एवं बहुद्देश्यीय। क्षेत्रीय देवालय कहलाते हैं और सुविस्तृतों को तीर्थ कहते हैं। भगवान सर्वव्यापी होने से निराकार है। पर उनकी साकार स्थापना इसलिए करनी पड़ती है कि सूक्ष्म दर्शन में असमर्थ सामान्य बुद्धि को प्रत्यक्ष दृश्य देखकर स्मरण हो उठे, आकर्षण बढ़े और प्रेरणा-जगे। देवालयों की स्थापना इसलिए होती है कि उन केन्द्रों से सम्पर्क रखने वालों को सम्पर्क साधते रहकर आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता की त्रिवेणी का नियमित रूप से अवगाहन करने का अवसर मिलता रहे। प्रातः से लेकर सायंकाल तक देवालयों में चलने वाली गतिविधियों का उद्देश्य यही था कि उस क्षेत्र में जन समुदाय का लोक मानस श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा की दृष्टि से उच्चस्तरीय बना रहे। सर्वजनीन चिन्तन एवं चरित्र का उत्कृष्टता के साथ सघन सम्बन्ध बना रहे।

गांव-गांव, मुहल्ले-मुहल्ले, छोटे-बड़े देवालयों की आवश्यकता इसीलिए समझी गई कि वे अपने-अपने क्षेत्र में जन-जागरण के केन्द्र बनकर रहें। यह स्थानीय देवालयों की बात हुई। इससे बढ़कर दूसरा प्रयास है—तीर्थों का। उन्हें भावना क्षेत्र के शोध संस्थान, निवारक अस्पताल, संवर्धक सेनेटोरियम, विभिन्न फैकल्टियों से सुसम्पन्न महा-विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के समतुल्य समझा जा सकता है। बच्चों के गुरुकुल गृहस्थों के समाधान-सत्र एवं अधेड़ों के आरण्यक बन कर, वे रहते थे। तत्वदर्शी ऋषि प्रकृति सान्निध्य में जलाशयों की सुविधा वाले ऐतिहासिक प्रेरणाओं से जुड़े हुए स्थान इस निमित्त चुनते थे और वहां ऐसी प्रवृत्तियों का सूत्र संचालन करते थे, जिनमें दूर-दूर से लोग पहुँचते रहें। घर से दूर रहकर उपयुक्त मनः स्थिति एवं प्रेरणाप्रद परिस्थिति का लाभ उठाते हुए व्यक्तियों का समग्र परिष्कार कर सकें।

प्रस्तुत देवालयों को पुरातन निर्धारण के अनुरूप अपनी गति-विधियाँ बदलने के लिए समझाने-दबाने पर जब सफलता नहीं मिलती दीखी, तो पुरातन प्रक्रिया का अभिनव निर्धारण करते हुए युग देवालयों की स्थापना का प्रयास किया गया है। २४०० प्रज्ञा पीठें इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बना कर खड़ी की गई हैं। यह समर्थ गुरु रामदास द्वारा महाराष्ट्र के हर गांव में महावीर मन्दिरों की स्थापना का अनुकरण है। उन्होंने सस्ते हनुमान मन्दिर बनाये थे, पर-बलिष्ठता के लिए व्यायाम शालाएँ और प्रखरता के लिए कथा परम्पराएँ उनके साथ अविच्छिन्न रूप से जोड़ी थीं। प्रज्ञा पीठों को प्रज्ञा युग का आलोक वितरण-कार्य अपने अपने क्षेत्र में करते रहने का उत्तरदायित्व सौंपा है। उन सभी को जन जागरण की पंचसूत्री योजना परिपूर्ण उत्साह के साथ चलाते रहने के लिए बाधित किया गया हैं। आशा की जानी चाहिए कि विनिर्मित सभी प्रज्ञा संस्थान स्थापना के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पुरातन काल जैसी देवालय परम्परा को ठीक प्रकार निर्वाह करने लगेंगे। यह प्रभात्री प्रचलन यहाँ से चल पड़ा तो यह आशा भी की जानी चाहिए कि अन्यत्र भी उसका अनुकरण होगा। लोकमत के दबाव से उन्हें भी अपनी गतिविधियों को सुधारने के लिए विवश होना पड़ेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रचलित तीर्थों की गतिविधितों में पुरातन परम्परा के अनुरूप हेर-फेर हो, वह प्रयत्न करने में कुछ उठा नहीं रखा गया, पर जड़ता बदलती कहाँ है। ऐसा न होता तो जंग खाई टूटी-फूटी कढ़ाइयों को नये सिरे से गलाने ढालने की आवश्यकता क्यों पड़ती ? तीर्थ भी बदलेंगे। उन्हें भी नालन्दा, तक्षशिला की तरह अपनी वर्तमान गतिविधियों में धर्म क्षेत्र की सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ न कुछ बदलना और करना होगा। सीखना हो तो ईसाई मिशन से भी इस संदर्भ में बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

तीर्थ परम्परा बहुत पुरानी है, पर जब खण्डहरों की मरम्मत न बन पड़ी, तो आद्य शंकराचार्य ने देश के चार कोनों पर चार धामों की स्थापना करके युगधर्म के निर्वाह का—पुरातन परम्परा के पुनर्जीवन का अभिनव प्रयत्न किया। प्रज्ञा मिशन को अभी मात्र एक तीर्थ की स्थापना में सफलता मिली है। मात्र एक गायत्री तीर्थ ही बन सका है। सोचा गया है कि बहुत असमर्थों की सृष्टि करने की अपेक्षा एक समर्थ बन पड़े तो भी हर्ज नहीं। काबा एक, यरुशलम एक, बुद्ध गया एक, स्वर्ण मन्दिर एक—रहने पर भी जब काम चल रहा है, तो फिलहाल एक गायत्री तीर्थ पर भी शक्ति केन्द्रित किए रहने पर कुछ तो काम चलेगा।

तीर्थ का उद्देश्य और स्वरूप समझने के लिए—अनेकता में एकता का दर्शन करने के लिए अनेकानेक तीर्थों की स्थापना हुई थी। लोग उन सभी को देखने के लिए तीर्थ यात्रा पर निकलते हैं। चारधाम, सप्तपुरियाँ, सप्तसरिताएँ, सप्तक्षेत्र, द्वादश ज्योतिर्लिंग, द्वादश शक्तिपीठें प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त अवतारों, देवताओं, ऋषियों, महामानवों के कार्य क्षेत्रों में भी तीर्थ बने हैं। सम्प्रदायों के अपने-अपने तीर्थ हैं। जहाँ से महत्त्वपूर्ण सत्प्रवृत्तियों का संचालन होता है, उन्हें भी तीर्थ कह सकते हैं। इस सबको मिलाकर इन दिनों यात्रियों, दर्शनार्थियों, पर्यटकों से घिरे-भरे रहने वाले तथा कथित तीर्थों की संख्या हजारों हैं। दर्शनार्थी आमतौर से, प्रतिमाओं, इमारतों घाटों, सरोवरों के दर्श-स्पर्श से पुण्य फल मिलने की भावना से आते रहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस परम पुनीत प्रयोजन में उन्हें कुछ सफलता मिलती है या नहीं इसे ईश्वर ही जानता है यदि वस्तुतः ऐसा ही होता तो फिर कोई संयम-साधना एवं परमार्थ-तपश्चर्या के कष्टसाध्य झंझट में न पड़ता। यह सस्ती-दर्शन झाँकी ही जीवन-लक्ष्य को पूरा कर दिया करती। देवता इतने भले आदमी कहाँ हैं, जो मस्तक झुकाने, नया पैसा चढ़ाने भर से हर दर्शक की चित्र-विचित्र मनोकामनाएँ पूरी करने में निरन्तर लगे रहें।

जो हो, तीर्थ स्थापना का—तीर्थ परम्परा का प्रचलन किस आचार पर, किस आधार पर प्रादुर्भूत हुआ, इसका तात्विक विवेचन करने पर प्रकट होता है कि तीर्थ कहाँ बने हैं, जहाँ (१) कोई महामानव, ऋषि, तपस्वी आत्म कल्याण और लोक कल्याण के पुण्य प्रयोजन की तपश्चर्या में निरत रहे हों (२) किसी देवता ने किसी परमार्थ परायण साधक के प्रयत्नों में सहायता करने के लिए वरदान दिया हो (३) ऐसी कोई घटना घटित हुई हो. जिसमें आदर्शवादिता पनपने, के लिए त्याग. बलिदान करने का इतिहास जुड़ा हो (४) कोई महत्वपूर्ण निर्धारण या शुभारम्भ वहाँ हुआ हो। (५) किसी महामानव का जन्म स्थान या क्रिया-कलापों का कार्य क्षेत्र रहा हो (६) उस स्थान की अपनी प्राकृतिक, विशेषता रही हो, इसी परिधि में प्रायः हर तीर्थ की स्थापना, परम्परा एवं गरिमा का मूल्यांकन किया जा सकता है।

परिभ्रमण चाहे कितने ही तीर्थों का क्यों न किया जाय, इन सभी के पीछे घटनाक्रम एवं इतिहास अलग-अलग रहते हुए भी उद्देश्य उपरोक्त ही दृष्टिगोचर होंगे। अनेक स्थानों पर जाकर अनेक देवताओं को वशवर्ती करना, और सब से अलग-अलग प्रसादों से झोली भर लेने के भ्रम में किसी को भी नहीं रहना चाहिए। सोचना सीखना इतना भर चाहिए कि तीर्थ किस प्रयोजन के लिए बने और जब कभी उनमें जीवन रहा होगा, तब किन गतिविधियों का प्रतिनिधित्व, सूत्र संचालन करते रहे होंगे। यह जानकारी प्राप्त कर लेना भर उद्देश्य नहीं होना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीर्थ यात्रियों की भावना, दर्शन-झाँकी करते समय इस प्रकार उभरनी चाहिए कि महान प्रयोजनों की पूर्ति इन दिनों वर्तमान परिस्थितियों में किस प्रकार हो सकती है, और उस पुनर्जीवन में अपना क्या योगदान हो सकता है। उपयोगी प्रेरणाएँ लेकर जो लौटें, समझना चाहिए कि उसी की तीर्थ यात्रा सफल हुई, अन्यथा देखने भर की बात कौतूहल के अतिरिक्त और कोई प्रयोजन सधता नहीं है।

गायत्री तीर्थ में प्रायः सभी प्रमुख तीर्थों के चित्रों का एक सुसज्जित दर्शन कक्ष बनाया गया है, ताकि आगन्तुकों को उस निमित्त बने देवालयों की दर्शन झांकी करने का सुयोग एक ही स्थान पर मिल सके। आँखों से मस्तिष्क की प्लेट पर चित्र उतरना भर है। इमारतों को देख कर भी वही काम हो सकता है, जो चित्रों के देखने से होता है। प्रेरणा लेना हो तो गान्धी जी की प्रतिमा से भी ली जा सकती है और उनकी तस्वीर से भी। यदि छवि देखना भर अभीष्ट हो, तो बात दूसरी है। गणेश जी जब सब तीर्थों की यात्रा न कर सके तो भूमि पर राम नाम लिख कर उसी की परिक्रमा कर ली और उस प्रतिस्पर्धा में विजेता माने गये। तीर्थों की इमारतें न सही, तस्वीर देख कर भी आंखों का समाधान हो सकता है। तत्व दर्शन तो विवेक बुद्धि का विषय है। उसका अवगाहन तीर्थ की चित्र प्रतिमाएँ भी मूर्ति दर्शन के समतुल्य ही करा सकती हैं। हमें तीर्थों के मूल में सन्निहित उन प्रेरणाओं पर ध्यान देना चाहिए, जिनके लिए उनका निर्माण हुआ था। वे शिक्षाएँ यदि प्रेरणा बन कर हृदयंगम हो सकें और जीवन चर्या में स्थान पा सकें, तो समझना चाहिए तीर्थ दर्शन का पुण्य सच्चे अर्थों में मिल गया। ऐसे ही भावना शीलों के यहाँ देवता स्वयं ही दौड़े आते हैं। रैदास की कठौती में गंगा प्रकट होने का व्याख्यान सर्व विदित है।

गायत्री तीर्थ में कल्प साधना के लिए, तीर्थ सेवन के लिए आने वाले साधक हर दिन तीर्थ दर्शन का प्रत्यक्ष पुण्य फल लेते हैं, साथ ही यह चिन्तन-मनन भी करते कि उन्हें तीर्थ सान्निध्य से क्या प्रकाश ग्रहण करना चाहिए और अपने में क्या परिवर्तन लाना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तराखण्ड के चार प्रमुख धाम प्रख्यात हैं—(१) बद्रीनाथ (२) कनखल (३) ऋषिकेश (४) लक्ष्मण झूला। छोटे या बड़े धामों में से कौन किसका दर्शन करे—यह अपनी-अपनी सुविधा से ऊपर निर्भर है। प्रेरणा दोनों ही यातायातों में समान रूप से उपलब्ध की जा सकती हैं। सभी के अपने इतिहास हैं, किन्तु लक्ष्य निश्चित रूप से एक ही है।

जिस प्रकार प्रत्येक पर्व-त्यौहार, ऋषि, महामानव, तीर्थ, अवतार का अलग-अलग इतिहास एवं उद्देश्य है, उसी प्रकार प्रत्येक देवता को भी किसी-न-किसी उत्कृष्ट आदर्शवादिता का, दिव्य क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हुए पाया जा सकता है। हरिद्वार क्षेत्र चार भागों में विभाजित है। इसमें हरिद्वार क्षेत्र को महामाया, संघशक्ति दुर्गा का क्षेत्र माना गया है। कनखल में शिव की तप साधना का इतिहास प्रखर होता है। ऋषिकेश ऋषिकल्प भरत जी की भक्ति भावना का महत्व समझाता है, और लक्ष्मण झूला में लक्ष्मण जी के परामर्श को समझने-अपनाने की प्रेरणा मिलती है। उपरोक्त चार देवों के मध्य में अवस्थित, विश्वामित्र द्वारा आराधित, महाप्रज्ञा गायत्री अवतरण का गोमुख, गायत्री तीर्थ है। इन पाँचों के समन्वय से पंचमुखी गायत्री का एक समग्र स्वरूप बनता है। हर आत्मवादी को उपरोक्त पाँचों विभूतियों से अपने आपको सुसम्पन्न करते हुए पंचकोश जागरण से मिलने वाली ऋद्धि-सिद्धियों का लाभ लेना चाहिए।

गायत्री तीर्थ में उच्चस्तरीय साधनात्मक एवं शिक्षापरक विधि-व्यवस्था का समन्वय विद्यमान है। परिभ्रमण के लिए उत्तराखण्ड की छोटी या बड़ी यात्रा जिन्हें करनी हो, उन्हें इस ध्रुव केन्द्र का दर्शन-अवश्य करना चाहिए। यह दर्शनीय भी है, और प्रेरणाप्रद पुण्य फलदायक भी। इन दिनों शान्तिकुञ्ज में चल रहे कल्प साधना सत्र के साधक ८—८ की टोलियों में समीपवर्ती क्षेत्र के गांवों की प्रदक्षिणा करने जाते हैं। क्रम यही रहता है। भोजन यह लोग वहाँ अपने हाथ पका कर ही खाते हैं। एक रात गाँव में ठहर कर ग्रामीण जनों को जो प्रेरणा प्रवाह देकर लौटते हैं। उससे चिरस्थाई प्रज्ञा प्रकाश जागृत होता पाया गया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म प्रचार की पदयात्रा को तीर्थ यात्रा कहा गया है। इसके लिए हर प्रज्ञा परिजन को वर्ष में एक बार न्यूनतम पन्द्रह दिन का कार्यक्रम बनाना चाहिए। अपने यहाँ से साइकिलों पर आवश्यक सामान लेकर, एक प्रवास सर्किल बना कर, कई साथियों की टोली बना कर निकलना चाहिए। दिन में रास्ते चलतों से सम्पर्क-परामर्श, दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन। रात्रि को कथा-कीर्तन द्वारा विराम स्थल के लोगों को युगान्तरीय चेतना का परिचय-प्रवचन। इसी प्रकार यात्रा क्रम पूरा किया जा सकता है।

एक महीने के लिए कल्प साधना सत्र में सम्मिलित होने वाले शिक्षार्थियों के लिए ऐसी व्यवस्था भी की गई है, कि वे पन्द्रह दिन समीपवर्ती क्षेत्र की तीर्थ यात्रा करते हुए धर्म प्रचार की यात्रा का पुण्य तथा प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। इसके लिए मोटर साइकिलों का प्रबन्ध किया गया है, ताकि उन पर आवश्यक प्रचार सामग्री तथा दैनिक उपयोग की वस्तुएँ लाद कर चला जा सके। स्मरण रहे, प्रज्ञा अभियान में साइकिल को भी पदयात्रा का ही एक प्रकार माना गया है। जो लोग इन यात्राओं के लिए समय देते हैं उन्हें पहले शान्तिकुञ्ज में प्रवचन करने, ढपली पर युग गीत गा सकने की योग्यता निखारने तथा आवश्यक कर्मकाण्ड सम्पन्न कराने का अभ्यास करा दिया जाता है। उनके लिए कार्यक्रम पहले से बना दिए जाते हैं और उन क्षेत्रों में भेज दिया जाता है जहाँ स्थानीय व्यक्तियों के सहयोग से मर्मस्पर्शी तीर्थ यात्रा सम्पन्न करने का पुण्य अर्जित करते हैं।

अपने यहाँ से साइकिल पर सवार होकर मण्डली समेत हरिद्वार पहुँचना और दूसरे रास्ते उसी प्रकार धर्म प्रचार करते हुए वापिस लौटना, शान्ति कुञ्ज में कुछ समय तीर्थ सेवन का लाभ लेना, यह निर्धारण भी ऐसा है, जिसे परिजन सुविधानुसार समय निकाल कर कार्यान्वित कर सकते हैं।

प्रका० मुद्रकः—युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य ३५:— पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org